ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्यकृत

वर्णरत्नाकर

व्याख्या-सहित

सम्पादक ओ व्याख्याकार

प्रो० आनन्द मिश्र

अध्यक्ष; मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय

श्री गोविन्द झा

उपनिदेशक, राजभाषा-विभाग, बिहार सरकार; पटना



मैथिली अकादमी प्रकाशन-५६

प्रकाशक :
मैथिली अकादमी,
श्रीकृष्णापुरी, पटना-८००००१

प्रथम संस्करण—१९८०
प्रति—११००
द्वितीय संस्करण—१९९०
प्रति—२२००

मूल्य : १७.५०



मुद्रक
धर्मयुग प्रेस
महेन्द्रू, पटना-६

प्रकाशकीय

कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकर केवल मैथिली-साहित्यमे नहि, अपितु भारतक सकल आधुनिक आर्यभाषा-साहित्यमे, अनेक दृष्टिएँ, एक अद्‌भुत ओ उत्कृष्ट कोटिक ग्रन्थ मानल गेल अछि। एकर एकमात्र संस्करण एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्तासँ १९४० मे भेल छल आ सेहो चिरकालसँ अलभ्य अछि। तेँ एकर पुनर्मुद्रण अकादमीक प्रथमे वर्षक कार्यक्रममे स्वीकृत भेल ओ सम्पादनक भार पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक अध्यक्ष प्रो० आनन्द मिश्रकेँ देल गेलनि जे एहि ग्रन्थक गहन अध्ययन कयने छथि। ई ग्रन्थ जेहने उपादेय अछि तेहने कठिन सेहो। तेँ प्रस्तुत संस्करणमे मूल ग्रन्थक अतिरिक्त व्याख्या सेहो देब आवश्यक बूझल गेल : एकर व्याख्या लिखब यथार्थमे बड़ दुरूह छल ओ ताहूसँ दुरूह छल एकर पाठशोधन। अतः एहि काजमे संग देबाक हेतु श्री गोविन्द झासँ अनुरोध कयल गेल। हर्षक विषय जे ई दुनू विद्वान् मिलि परम परिश्रमपूर्वक ई काज सम्पन्न कयलनि जे आइ अपने लोकनिक हाथमे अछि।

एहिमे मूल ग्रन्थ प्रथम संस्करणक अनुसार अविकल राखल गेल अछि, कारण जे ई मूल तड़िपतक अविकल लिप्यन्तरण थिक ओ जेँ ओ मूल तड़िपत आब लुप्त भ गेल अछि, तेँ अगत्या एही लिप्यन्तरणकेँ मूल ग्रन्थक गौरव देबय पड़त। एहिमे शब्दसूची सेहो प्रथम संस्करणक अनुसार अविकल प्रतिमुद्रित कयल गेल अछि। यद्यपि सम्पादन-क्रममे ई स्पष्ट भ' गेल जे एहि शब्दसूचीमे बहुत शब्द छूटल अछि। उदाहरणार्थ, पहिल (एहि संस्करणक उनैसम) पृष्ठक एतबा शब्द नहि पाओल जाइछ—तोँगल, तेँलि, धेओल, ओड, नंढ, करिहार।

तथापि एकरा परिशुद्ध करबाक प्रयास अधिक श्रमसाध्य ओ व्ययसाध्य बूझि एहि संस्करणमे नहि कयल जा सकल।

ओना तँ एहिमे यथाशक्ति अधिकसँ अधिक शब्द ओ वाक्यक व्याख्या करबाक पूर्ण चेष्टा कयल गेल अछि, तथापि विषयक विविधता ओ गहनता, तथा पाठविकृतिक कारणेँ बहुत अंश अनुसन्धेय रहि गेल अछि।

आशा जे ई संस्करण सामान्य छात्र ओ अनुसन्धानरसिक विद्वान् दूनू वर्गक हेतु उपयोगी सिद्ध होयत।

श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'
अध्यक्ष
मैथिली अकादमी

पटना
२५ फरबरी १९७०

विषय-सूची

प्रस्तावना

पोथीक स्वरूप ओ स्रोत

ज्योतिरीश्वरकृत वर्णरत्नाकरक एकमात्र हस्तलेख उपलब्ध अछि जे बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ताक सरकारी हस्तलेख-संग्रह मध्य (संख्या ४८/३४) सुरक्षित अछि। एहिमे ७७ पात छल, किन्तु संग्रहक समय १७ पात (पात १ सँ ६ धरि तथा ११, १२, १४, १५, १७, १६, २६ ओ २७) हराय गेल छल। ई सुन्दर तड़िपतपर प्राचीन तिरहुता अक्षरमे लिखल अछि। तरिपतक विस्तार लगभग ३८ × १५ से० मी० अछि। सामान्यत: एक पीठमे पाँच पाँती अछि, किछुमे चारि पाँती ओ कतोकमे छओ पाँती सेहो। सौभाग्यवश एकर अन्तिम पृष्ठ सुरक्षित अछि ओ से तिथ्यंकित अछि। ई लक्ष्मण संवत् ३८८ मे आश्विन बदि सप्तमी रवि दिन लिखल गेल। ओहि समयमे ल०सं० ओ शाकेक बीच ११२१ वर्षक अन्तर छल। प्रमाण ई जे विद्यापति अनल-रन्ध-कर (३०२) ल० सं०केँ समुद्र-कर-अगिनि-ससी (१३२४) शाके कहलनि अछि। तदनुसार ई शाके १५०९ (१५८७ ई०)मे लिखल गेल छल। एकर एकमात्र हस्तलेख म० म० हरप्रसाद शास्त्रीक सहायक पण्डित विनोदविहारी काव्यतीर्थकेँ मिथिलामे भेटल छलनि। ज्ञातव्य जे म० म० सर गंगानाथ झा अपन जीवनीमे लिखने छथि जे उक्त शास्त्रीजी एक पण्डितकेँ प्राचीन हस्तलेखक संग्रहार्थ मिथिला पठओने छलाह ओ सर झा हुनक बहुत सहायता कयने छलथिन (पृ० ३८)। ओ व्यक्ति छलाह विनोदविहारी काव्यतीर्थ (पृ० १३०) जे वर्णरत्नाकर उपलब्धिक यशोभागी भेलाह। म० म० हरप्रसाद शास्त्री **रिपोर्ट ऑन दि सर्च ऑफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट** (१८९५-१९००)मे, जे बंगाल एशियाटिक सोसाइटीसँ १९०१ ई०मे प्रकाशित भेल, पृठ २३ मे वर्णरत्नाकरक वर्णन एहि रूपेँ कयने छथि—

"६. एहि आलोच्यकालमे जे अन्तिम मैथिल हस्तलेख प्राप्त भेल अछि से थिक ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्यकृत **वर्णनरत्नाकर**। हस्तलेख परम विपन्न अवस्थामे अछि। किन्तु जतबा भाग एखन धरि सुरक्षित अछि से स्पष्ट ओ सुन्दर अक्षरमे लिखल अछि। लिपि प्राचीन तिरहुता थिक जकरा प्राचीन बँगलासँ बेकछायब कठिन। भाषा मैथिली थिक, किन्तु ई बँगलासँ नीक जेकाँ बेकछाओल नहि जाय सकैत अछि, कारण जे एहिमे पचास प्रतिशतसँ अधिक अभिव्यक्ति बँगलाक अछि। ई पोथी चौदहम शताब्दीक

आदिभागक थिक। एखन धरि एहि कालक कोनो बंगाली वा मैथिल हस्तलेख प्रकाशमे नहि आयल अछि। एहि ग्रन्थक विषयवस्तु विचित्र अछि। एहिमे कविसमय (काव्य-परिपाटी) वर्णित अछि। यथा, यदि राजाक वर्णन करबाक हो तँ हुनक कोन-कोन गुण उल्लेखनीय थिक; यदि नगरक वर्णन करबाक हो तँ ओहिमे कोन-कोन बात कहल जाय, इत्यादि। कतहु-कतहु काव्य-परिपाटी बड़ रोचक लगैत अछि। उदाहरणार्थ कुट्टिनी वर्णन देखल जाय; 'सय वर्षसँ अधिक बयस, सार देह घोकचल त्वचा, शंख सन श्वेत केश, ऊँच माथ, मांसहीन काय, धसल गाल, झड़ल दाँत; (झगड़ा लगयबामे) नारदक बेटीक समान, नायक-नायिकाक मिलन करयबामे चतुर'; इत्यादि। लगैत अछि जेना विद्यापतिक प्रतिभा एहि ग्रन्थसँ आलोकित भेल हो। एहि ग्रन्थक रचना-कालक प्रसंगमे ई ज्ञातव्य जे ग्रन्थकार दरबार लाइब्रेरीमे सुरक्षित धूर्तसमागम नामक एक नाटकक हस्तलेखसँ सुविदित छथि। ई नाटक एही ज्योतिरीश्वर कविशेखरक कृति थिक जे मिथिलाक अन्तिम कर्णाटक राजा हरिसिंहदेवक शासनकालमे रचल गेल छल। प्रो० बेण्डाल हरसिंहदेवक समय १३२४क लगभग मानने छथि।"

वर्णरत्नाकरक ई तड़िपत बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक पुस्तकालयमे चिर काल धरि ओहिना पड़ल रहल। वगाब्द १३२३ (१९१६ ई०)मे जे हरप्रसाद शास्त्री **हाजार बछरेर पुराण बङ्गलाय बौद्ध गान ओ दोहा** प्रकाशित कयलनि, ताहिमे ओ एहि ग्रन्थसँ सिद्ध लोकनिक सूची उद्धृत कयलनि। एहि ग्रन्थक प्रथम सम्पादक स्व० सुनीति कुमार चटर्जी **वंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका**, वंगाब्द १३३० (१९२३ ई०)मे जे भिन्नांकवाचक संख्याशब्दक विषयमे एक निबन्ध लिखल ताहिमे एहिसँ एक उद्धरण देलनि। एहिसँ अतिरिक्त एकर उपयोग प्रायः सत्तरि-अस्सी वर्ष धरि केयो नहि कयलक। एतेक धरि जे मैथिलीकेँ सर्वप्रथम आलोकमे अननिहार ग्रियर्सन साहेबोक दृष्टिमे ई नहि आयल, ओ ने एकर चर्चा **लिंग्विटिक सर्वे आफ इंडिआ**, खण्ड ५, भाग २मे कयलनि आ' ने मैथिली-व्याकरणमे, जखन कि एहि दूनूक प्रकाशनसँ पूर्वहि ई हरप्रसाद शास्त्रीक रिपोर्टमे आबि चुकल छल। एकर चर्चा पुनः सुनीतिए बाबू **ओरिजिन एण्ड डेभलपमेण्ट आफ दि बेङ्गाली लैंगुएज**, १९२६ (खंड १, पृ० १०२-३) मे कयलनि। तदतिरिक्त, एहि हस्तलेखक उपयोग कयल श्री मनमोहन चक्रवर्ती। ई **बंगाल एशिआटिक सोसाइटीक जर्नल** १९१५ (पृ० ४०७-४३३)मे मोगल-पूर्व मिथिलाक राजनैतिक इतिहासपर एक निबन्ध लिखलनि, जाहिमे ज्योतिरीश्वरकेँ 'मैथिलीक प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थक रचयिता' कहने छथि। ओ तड़िपतकेँ स्वयं

देखि ई बात प्रकाशमे अनलनि जे एकर नाम म० म० हरप्रसाद शास्त्री जे वर्णन-रत्नाकर देल अछि से भ्रान्त थिक, तड़िपतमे एकर नाम सर्वत्र वर्णरत्नाकर देल अछि।

मैथिली १९१९ ई० मे कलकता विश्वविद्यालयमे देशीय भाषासाहित्य रूपें स्वीकृत भेल। ताधरि एकर अधिकांश साहित्य अप्रकाशिते छल। एहिसँ पठन-पाठनमे असुविधा देखि सर आशुतोष मुखर्जी कतोक मैथिली-ग्रन्थकें विश्वविद्यालयक दिससँ प्रकाशित करयबाक नेआरें देवनागरीमे प्रतिलिखित करओलनि। ततबे नहि, ओ मिथिलाक्षरक काँटा बनयबाक सेहो नेयार कयने रहथि। किन्तु १९२४ ई० मे ओ सहसा स्वर्गीय भ 'गेलाह आ' हुनक नेआर नेआरे रहि गेल। वर्णरत्नाकर कतोक वर्ष धरि मैथिली एम० ए० परीक्षाक पाठ्यग्रन्थ रहल। कलकता विश्वविद्यालय एकर देवनागरीमे प्रतिलिपि करओलक, किन्तु अपरिहार्य कारणें एकर प्रकाशन बहुत दिन तक रुकल रहल प्रतिलिपिकें सुनीतिबाबू स्वयं मूल ग्रन्थसँ मिलाय शोधित कयने छलाह ओ ताहि आधारपर एकर प्रेस कापी पण्डित खुद्दी झा तैआर कयलनि जे ओहि समयमे कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिलीक व्याख्याता रहथि। एकरा सम्यक् रूपें सम्पादित करबाक हेतु कोनो दोसर परिपूर्ण हस्तलेख प्राप्त करब परमावश्यक प्रतीत भेल। पण्डित खुद्दी झा मिथिलामे तदर्थ पर्याप्त अन्वेषण कयलनि, किन्तु सफल नहि भेलाह। अन्ततः एकमात्र एशियाटिक सोसाइटीक उक्त हस्तलेखक आधारपर सुनीतिकुमार चटर्जी ओ पण्डित बबुआ जी मिश्र एकरा जेना-तेना सम्पादितक' १९४० ई० मे बंगाल एशियाटिक सोसाइटीसँ प्रकाशित करओलनि। मूल तड़िपत हाल धरि बं० ए० सो० क पुस्तकालयमे सुरक्षित छल, किन्तु सुनैत छी जे लुप्त भ' गेल अछि।

ग्रन्थकार : हुनक कृति ओ काल

एहि ग्रन्थ रचयिता कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर भारतीय साहित्यक इतिहासमे विख्यात छथि। संस्कृतमे हिनक दू गोट कृति परम प्रसिद्ध अछि, एक कामशास्त्र-ग्रन्थ पञ्चसायक ओ दोसर धूर्तसमागम प्रहसन। बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल १९१५ (पृ० ४१४, पादटिप्पणी) मे मनमोहन चक्रवर्ती कहैत छथि जे ज्योतिरीश्वर कामशास्त्रक एक आओर ग्रन्थ रङ्गशेखर लिखने छलाह ओ कहल जाइत अछि जे संस्कृत-साहित्यमे एहि ग्रन्थक प्रचुर उद्धरण भेटैत अछि। परन्तु एहि ग्रन्थक पता आइ धरि नहि लागल अछि।

पञ्चसायक अनेक बेर अनेकठामसँ प्रकाशित भ' चुकल अछि। एकर आरम्भमे ज्योतिरीश्वर स्वयं अपन गुणवर्णन उदात्त स्वरमे कयने छथि—

अस्ति प्रत्यहमर्थिताप्रहरणः क्लृप्तैकदीक्षागुरुः
श्रीकण्ठार्चनतत्परो भुवि चतुःषष्टेः कलानां निधिः।

संगीतागमसत्प्रमेयरचनाचातुर्य्यचूडामणिः
ख्यातः श्रीकविशेखरार्पितपदः श्रीज्योतिरीशः कविः ॥

'प्रतिदिन शरणागतक रक्षा करब हिनक एकमात्र संकल्प छल । ई शिवक उपासक छलाह, चौंसठिओ कलामे प्रवीण छलाह, ओ कविशेखर उपाधि पओने छलाह । एहि ग्रन्थसँ हिनक विषयमे एतबे बात ज्ञात होइत अछि ।

धूर्तसमागम हिनक बड़ लोकप्रिय भेल । एकर हस्तलेख यत्र-तत्र भेटैत अछि । एकरा सर्वप्रथम लेटिन टिप्पणी सहित एन्थोलोजिया सैन्सक्रिटिका (बोन, १८३८ ई०) मे क्रिश्चियन लैसेन प्रकाशित कयलनि । ततःपर १८८३ ई० मे सी० कैपलर जेनासँ सीसकाक्षर (लीथो) मे छपलनि । तकरा बाद बम्बै, कलकत्ता ओ काशीसँ अनेक बेर छपल । विल्सनसँ विन्टरनिट्ज धरि प्रायः सभ यूरोपीय पण्डित-लोकनि अपन-अपन इतिहासमे एकर उल्लेख कयने छथि । एहि ग्रन्थक प्रस्तावनामे हिनक काल ओ वंशक परिचय स्पष्ट रूपें भेटैत अछि । यथा—

नानायोधनिरुद्धनिर्जितसुरत्राणत्रसद्वाहिनी-
नृत्यद्भीमकबन्धमेलकदलद्भूमिभ्रमद्भूधरः ।
अस्ति श्रीहरिसिंहदेवनृपतिः कार्णाटचूडामणि-
र्दृप्यत्पार्थिवसार्थमौलिमुकुटन्यस्ताङ्घ्रिपङ्करुहः ॥
तस्योद्दण्डभुजप्रतापदहनज्वाला निरस्ता यदा
राज्ञः सर्वगुणानुरागपदवीविद्योतनाचार्य्यकः ।
यो धीरेश्वरवंशमौलितिलको दाताऽवदाताशय-
स्तस्य श्रीकविशेखरस्य कविता सच्चित्तम लम्बते ॥

तदनेन सकलसंगीतविशेषविध्यीतनाभिनवभरतेन पुरमथनपदारविन्दद्वन्द्व-वन्दारुकरपल्लवेन निखिलभाषोपभाषाशुभंभावुकसरस्वतीकण्ठाभरणेन अनवरतस्व-सोमरसास्वादकषायकण्ठकन्दलीनरीनृत्यमानमीमांसामहोत्सवेन रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्रभवतः पवित्रकीर्तेर्धीरेश्वरस्यात्मजेन महाशासनश्रेणीशिखरग्राम(ज)त्पल्लीजन्म-भूमिना कविशेखराचार्यज्योतिरीश्वरेण निजकुतूहलविरचितं धूर्त्तसमागमं नाम नाटक-मभिनेतुमादिष्टोऽस्मि ।

एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे ज्योतिरीश्वरक पिता छलाह धीरेश्वर ओ पितामह छलाह रामेश्वर ; हिनक मूल छल पाली तथा ई कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरिसिंह देवक कालमे भेल छलाह ।

1192

हिनक परिचयक विषयमे पूर्वमे अनेक प्रकारक भ्रान्त धारणा पसरल छल। कतोक हस्तलेखमे हरिसिंहदेवक स्थानमे नरसिंहदेव पाठ पाओल जाइत अछि। अतः क्रिश्चियन लैसन हिनका विजयनगरक राजा नरसिंह (१४८७-१५०८ ई०)क आश्रित मानने छलाह। एहि भ्रमक निराकरण म० म० हरप्रसाद शास्त्री अन्यान्य हस्तलेखमे हरिसह वा हरिसिंह पाठ देखि कयलनि। हरिसिंहदेव दिल्लीक सुलतान गियासुद्दीन तुगलकसँ लड़ल छलाह, ओ पराजित भ' जंगलमे भागि गेल छलाह, से कथा मिथिलामध्य परम्परासँ प्रचलित एक श्लोकसँ ज्ञात होइत अछि—

बाणाब्धिबाहुशशिसम्मितशाकवर्षे पौषस्य शुक्लनवमी-क्षितिसूनुवारे।
त्यक्त्वा स्वपट्टनपुरं हरिसिंहदेवो दुर्दैवदेशितपथो गिरिमाविवेश॥

अर्थात् शाके १२४५ (शशि १, बाहु २, अब्धि ४, बाण ५)मे पौष शुक्ल नवमी मङ्गल दिन हरिसिंहदेव दुर्भाग्यवश अपन राजधानी छाड़ि गिरि-गह्वरमे प्रवेश कयलनि। ई शकाब्द १३२३ ई० होइत अछि। जिआउद्दीन बर्नीक लिखल तारीखे फीरोजशाही (१४ म शतकक उत्तरार्ध)मे कहल गेल अछि जे सुलतान जखन मिथिला देने बंगाल प्रयाण कयलनि तखन तिरहुतिक स्थानीय राजालोकनि हुनका सलामी (राजस्व) देने रहथिन। एहिना फरिश्ता (१७म शतकक द्वितीय चरण)मे कहल गेल अछि जे तिरहुतक राजा ओ गियासुद्दीन तुगलकक बीच ओहि देशक पर्वतीय प्रान्तमे युद्ध भेल ओ राजा हारिक' जंगलमे पड़यलाह। एकर समय मुसलमान इतिहासकार लोकनि १३२४ ई० कहने छथि ओ से उपर्युक्त श्लोकक समय १३२३ ई० सँ लगभग मिलैत अछि। अतः ज्योतिरीश्वर ठाकुर राजा हरिसिंहदेवक समकालीन छलाह, से सिद्ध होइत अछि।

ज्योतिरीश्वरक वंशक विषयमे पूर्वमे एक भ्रान्ति प्रसिद्ध भ' गेल छल। वंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्तासँ बंगाब्द १३१६ मे प्रकाशित विद्यापतिक गीतसंग्रहक भूमिका (पृ० ६)मे नगेन्द्रनाथ गुप्त लिखलनि जे ज्योतिरीश्वर ठाकुर विद्यापतिक पितामह भ्राता छलाह। प्रायः हिनक मतक अनुसरण करैत म० म० डा० उमेश मिश्र सेहो इयेह बात लिखि देलनि ओ तहियासँ १९५० ई० धरि ई भ्रान्त धारणा पसरल रहल। एहि भ्रान्तिक निराकरण कयलनि आचार्य रमानाथ झा। ई बिहार रिसर्च सोसाइटीक जर्नल, भाग ३-४, १९५१ ई० मे प्रकाशित अपन लेखमे सकल अज्ञानान्धकारकें दूर क' स्पष्ट क' देलनि जे ई बिसइबार मूलक नहि, पाली मूलक छलाह। नागेन्द्रबाबू जे भ्रममे पड़लाह तकर कारण ई भेल जे विद्यापतिक प्रपितामहक नाम धीरेश्वर छल ओ ज्योतिरीश्वर सेहो अपन पिताक नाम धीरेश्वर कहने छथि।

एहि दून् धीरेश्वरके एक बूझि लेबाक कारणे ई भ्रान्ति पसरल। परन्तु वास्तवमे विद्यापतिक प्रपितामह धीरेश्वर देवादित्यक पुत्र छलाह, ओ ज्योतिरीश्वरक पिता धीरेश्वर रामेश्वरक पुत्र छलाह, तखन दून् एक कोना होयताह। ततबे नहि, विद्यापतिक मूल बिसफी थिक, किन्तु ज्योतिरीश्वर अपन मूल पाली कहैत छथि (पल्लीजन्मभूमिना)। आचार्य रमानाथ झा प्राचीन पंजीक मथन क' उपर्युक्त लेखमे ज्योतिरीश्वरक वंश-परिचय पंजीक आधारपर असन्दिग्धरूपें स्थापित क' देलनि अछि।

ज्योतिरीश्वर पञ्चसायक, धूर्तसमागम ओ वर्णरत्नाकरमे जे अपन परिचय देने छथि तदनुसार हिनक पूर्ण नाम ज्योतिरीश्वर छल ओ कविशेखर तथा आचार्य हिनक उपाधि छलनि। परन्तु बहुधा ई अपन उल्लेख केवल कविशेखर शब्दें करैत छथि, जेना ई हिनक द्वितीय नाम हो। हिनक जन्म पलिबाड़ ब्राह्मण कुलमें भेल छलनि। अतः हिनक कौलिक उपाधि ठाकुर छल, मुदा ई कतहु अपनाकें ठाकुर वा ठक्कुर कहलनि अछि। हिनक मूल पाली छल तकर उल्लेख धूर्तसमागम नाटकक प्रस्तावनामे किछु घुरछिआयल अछि, तें पूर्वमे कोनो विद्वान्कें ओकर आभास नहि भेलनि। उक्त नाटकमे ज्योतिरीश्वर अपन विशेषण देने छथि 'महाशासनश्रेणीशिखरभ्राम-त्पल्लीजन्मभूमिना।' एकर आशय आचार्य रमानाथ झा एहि तरहें लिखैत छथि—

> 'कतोक जे गाम पञ्जीप्रबन्धमे मूलग्राम कहाए प्रसिद्ध भेल तकरहि ज्योतिरीश्वर महाशासन कहैत छथि, कारण, नवीन सामाजिक संघटनमे एहि मूलग्रामक आधारपर सकल सद्ब्राह्मणक वर्गीकरण भेल ओ एही मूलग्रामक आधारपर वैवाहिक सम्बन्धादि सकल सामाजिक कृत्यक शासन आरम्भ भेल। ताहि मूलग्राम सबहिँ मध्य सर्वोच्च जे मूल बुझल गेल ताहिमे एक गोट अछि पाली, जकर संस्कृत रूप थिक पल्ली। एखनहु पाली···विद्यापतिक जन्मस्थान बिसपीसँ कोस दुइयेक वायव्य कोणमे अवस्थित समृद्धिशाली ग्राम अछि।'

ओना तँ आचार्य रमानाथ झा उपर्युक्त वाक्यक अर्थ पर्याप्त स्पष्ट क' देलनि अछि, तथापि एहिमे किछु विचारणीय रहि गेल अछि। एहिमे हमरा जनैत भ्रामत् पाठ अशुद्ध थिक, भ्राजत् होयबाक चाही—मूलग्राम-सबहुक शिखरपर विराजमान जे पाली। भ्रामत्, एकर अर्थ होयत 'घुमनिहार', जे एतय बैसैत नहि अछि। दोसर बात ई जे महाशासन शब्दक अर्थ एतय पंजी-व्यवस्थाक आधारपर 'मूलग्राम' करब किछु कठिन प्रतीत होइत अछि। मध्ययुगीन भारतमे भूभागक अर्थमे शासन शब्द खूब प्रचलित अछि, एकरा परवर्ती कालक परगना वा जिलाक पर्याय कहि सकैत छी। अतः एकर 'बड़का-बड़का परगनासबहुक शिखरपर विराजमान जे पल्ली' एहन

अर्थ करब अधिक संगत प्रतीत होइत अछि । भ' सकैत अछि जे ओहि समयमे पाली मूलग्राम सेहो हो तथा प्रशासनिक एकक सेहो। ज्योतिरीश्वरक मूलग्राम पाली छल से महाशासन शब्दसँ नहि, अपितु जन्मभूमि शब्दसँ ध्वनित होइत अछि, किएक तँ ओहि समयमे जनिक जे जन्मभूमि छलनि सामान्यत: सैह तनिक मूलग्राम कहओलक। शासन वा महाशासन शब्दक प्रयोग मूलग्रामक तात्पर्यें हमरा कतहु नहि भेटल अछि।

आचार्य रमानाथ झा पाँजिक आधारपर ज्योतिरीश्वरक अनेक सम्बन्ध सूत्र भँजिअ-ओलनि अछि। तदनुसार ई पाली मूलक अबरभट्टा शाखामे पड़ैत छथि जकर कौलिक उपाधि ठाकुर थिक। आइ-काल्हि पञ्जीक साधारण पोथी मिथिलेशक खण्डवला-कुलसँ आरम्भ होइत अछि। ओहिमे भगीरथ ठाकुरक पौत्र धर्मपति ठाकुरक पत्नी रामा ज्योतिरीश्वरसँ बारहम ठाम अबैत छथि। ज्योतिरीश्वरक कन्याक विवाह स्मृति-सारकर्ता गंगौरमूलक म०म० हरिनाथक पौत्र शिवनाथ झासँ छलनि। शिवनाथक कन्याक विवाह संकोनामूलक धर्माधिकरणिक हरिहर मिश्रक पौत्र रुचि मिश्रसँ छल, ओ रुचि मिश्रक सोदर राम मिश्रक विवाह बिसैबार विरेश्वरक दौहित्रीमे। एहिसँ स्पष्ट अछि जे जें वीरेश्वर ओ ज्योतिरीश्वर दूनूक दौहित्रीक विवाह दुइ सहोदर भ्रातासँ भेल छल तें दूनू समकालीन भेलाह। आचार्य रमानाथ झा इहो प्रदर्शित कयलनि अछि जे महाराज शिवसिंहक तेसरि स्त्री महादेवी रतना, तथा महाराज धीरसिंहक जेठि स्त्री महादेवी हृदयवती ज्योतिरीश्वरक दौहित्रीक दौहित्रीपुत्री छलीह। एहि सम्बन्धसूत्रसभसँ ज्योतिरीश्वरक अस्तित्व तेरहम-चौदहम शताब्दीक सन्धिमे सिद्ध होइत अछि। मैथिल अनुश्रुतिक अनुसार हरिसिंहदेवक जन्म १२१६ शाकेमे ओ हुनक अन्तर्धान १२४५ शाके (१३२३ ई०)मे भेल। ज्योतिरीश्वर जहिया धूर्तसमागम लिखलनि तहिया हरिसिंहदेव वर्तमान तँ रहथि, किन्तु राज्यच्युत भ' चुकल छलाह। ई बात धूर्तसमागमक प्रस्तावनाश्लोकमे वर्तमानार्थक अस्ति शब्दक उल्लेखसँ तथा तस्योद्दण्डभुजप्रतापदहनज्वाला निरस्ता यदा एहि वाक्यसँ सिद्ध होइत अछि। अत: एकर रचना शाके १२४५क बाद भेल होयत। हिनक अन्य कोनो रचनामे कोनहु राजाक नाम नहि आयल अछि, ताहिसँ ई अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे वर्णरत्नाकर ओ पञ्चसायकक रचना अराजक कालमे भेल होयत। मिथिला हरिसिंहदेवक अन्तर्धानसँ ओइनिबारक राज्य-स्थापन पर्यन्त (शाके १२४५-१२७५) लगभग तीस वर्ष अराजक रहल ओ एही बीच वर्णरत्नाकरक रचना भेल होयत। जँ धूर्त्तसमागमक रचनाकालमे हिनक बयस तीस वर्ष मानी तँ हिनक जन्म १२४६ + ३०—१२१६ शाके १२७० (१३४८ ई०)क आस-पास मानल जा सकैत अछि। वर्णरत्नाकरमे ई जे अपन विद्वत्ता ओ प्रतिष्ठाक वर्णन कयलनि अछि ताहिसँ अनुमान कयल जा सकैत

अछि जे ई एकर रचना प्रौढ़ावस्थामे कयने होयताह । अतः वर्णरत्नाकरक रचना-काल शाके १२६६ (१३४४ ई०)क आस-पास राखल जा सकैत अछि । दोसर शब्दें कहि सकैत छी जे मैथिली-साहित्यक गगनमे एक दिस चन्द्रवत् ज्योतिरीश्वरक तिरो-भाव होइत अछि तँ दोसर दिस सूर्यवत् विद्यापतिक उदय । एहि तरहें आब ज्योतिरीश्वरक परिचय ओ कालक विषयमे सकल भ्रान्ति ओ सन्देह दूर भ' गेल अछि ।

मिथिलाक इतिहासमे ज्योतिरीश्वरक काल स्वर्णयुग कहल गेल अछि । की सैनिक शक्ति, की आर्थिक समृद्धि, की सांस्कृतिक उल्लास, की विद्याक विलास, की अखंड स्वतन्त्रता, सभ विषयमे मिथिला भारतक मानचित्रमे उत्कृष्ट स्थान पओने छल । उदयन, गङ्गेश ओ वर्द्धमान नव्यन्यायक प्रवर्तन एही कालमे कयलनि, धर्म-शास्त्रमे लक्ष्मीधरक विशालकाय स्मृतिकल्पतरु (रॉयल ४३१६ पृष्ठ), हरिनाथक स्मृतिसार, श्रीदत्तक आचारादर्श ओ चण्डेश्वरठाकुरक विशाल स्मृतिरत्नाकर एही कालमे लिखल गेल; मीमांसामे सेहो अनेक दुर्द्धर्ष विद्वान् भेलाह; आ' सभसँ बाढ़ि मातृभाषा मैथिलीमे सेहो वर्णरत्नाकर-सन ग्रन्थ लिखल गेल । बीच-बीचमे मुसलमा-नक आक्रमण तँ होइत छल, किन्तु ताहिसँ मिथिलाक आन्तरिक जीवनमे कोनो व्यघात नहि होइत छल । ई भारतक उच्चतम विद्यापीठ मानल जाइत छल ओ देशक विभिन्न भागसँ ज्ञान-पिपासु छात्र-लोकनि एतय आबि विद्यार्जन करैत छलाह । कर्णाट-राज-वंशमे ओइनिबार राजवंश जकाँ आन्तरिक कलह नहि छल । प्रजामे वर्गभेद रहितहुँ पारस्परिक सौमनस्य छल ओ जनजीवन परमशान्तिपूर्ण छल । वर्णरत्नाकर स्वयं एहि युगक सुख-शान्तिपूर्ण उल्लासमय जनजीवनक सुन्दर वर्णन थिक । यद्यपि ई ग्रन्थ मुख्यतः राजाकें केन्द्रबिन्दु बनाय परिकल्पित अछि तथापि एहिमे प्रसंगवश सामान्य जनजीवनक चित्रण, वन्य जातिसँ लय शासक जाति धरि सभ वर्गक, विस्तारपूर्वक कयल गेल अछि ओ कोनहु ठाम शोषण, उत्पीड़न, दैन्य वा घृणाक आभास नहि अछि । तें ई उचिते स्वर्णयुग कहबैत अछि ।

ग्रन्थक विषय ओ स्वरूप

वर्णरत्नाकर सर्वथा एक विचित्र प्रकारक ग्रन्थ थिक । कोनहु भाषामे एहि ढंगक आन कोनो ग्रन्थ कदाचिते पाओल जाइत अछि । एकर गणना ताहि वर्गक पोथी-सभमे कयल जा सकैत अछि जकरा कोनो वर्गविशेषमे राखब सम्भव नहि अछि । ई कोन उद्देश्यसँ ओ ककरा हेतु लिखल गेल ताहि प्रसंग विद्वान्-लोकनिमे बड़ मत-मतान्तर अछि । एकर प्रथम अवलोकक म० म० हरप्रसाद शास्त्रीक मतें एहिमे कवि-परिपाटी (Poetic convetion) प्रतिपादित अछि । अर्थात् काव्यमे कोन वस्तुक

वर्णन कोना करी, कविकेँ तकर मार्गदर्शन करायब एकर उद्देश्य थिक। एकर प्रथम सम्पादक सुनीतिकुमार चटर्जी कहने छथि जे ई लौकिक ओ संस्कृत शब्द सभक एक प्रकारक कोश थिक, काव्यमे वर्णनीय विविध वस्तु ओ भाव-सभक प्रसिद्ध उपमा ओ वर्णनपरिपाटीक संग्रह थिक। परन्तु तखन तँ एकर नाम **वर्णनरत्नाकर** होयबाक चाही; जे हरप्रसाद शास्त्री अपन सूचीमे देने छथि। मुदा उपलब्ध हस्तलेखमे प्रत्येक कल्लोलक अन्तमे एकर नाम **वर्णरत्नाकर** देल गेल अछि। स्वतः शङ्का उठैत अछि जे एहिमे वर्ण शब्दक प्रयोग कोन अर्थमे कयल गेल अछि। सुनीतिबाबूक कथन छनि जे वर्ण-शब्दक अर्थ वर्णन तँ नहि होइत अछि। किन्तु एकर एक अर्थ मध्यकालीन संस्कृतमे पाओल जाइत अछि, जे एतय लगाओल जा सकैत अछि। अन्य अर्थक अतिरिक्त **वर्ण** शब्दक एक अर्थ, हेमचन्द्र, हलायुध ओ मल्लिनाथक अनुसार, गीतक्रम-गीतक वा कविताक रचनाक्रम थिक। तदनुसार ई ग्रंथ स्वयं कोनो काव्यकृति नहि थिक, अपितु काव्यरचनाक हेतु उपयोगी सामग्रीक संकलनमात्र थिक। एहि ग्रन्थक रचनाक उद्देश्य मैथिलीमे वर्णनात्मक गद्यकाव्य लिखब नहि थिक, प्रत्युत एकर उद्देश्य अछि वस्तुसभक वर्णन करबामे उल्लेखनीय उपादान सभक सूची समुचित क्रममे समुचित विन्यासपूर्वक (मिलाउ वर्ण शब्दक अर्थ 'गीतक्रम') प्रस्तुत करब। डा० जयकान्त मिश्रक मत एहि विषयमे सुनीतिकुमार चटर्जीक मतसँ भिन्न अछि; डा० मिश्र वर्णरत्नाकरक अनुवाद The ocean of varnas or descriptions (वर्णनक समुद्र) करैत छथि। यद्यपि सुनीतिबाबू स्पष्ट शब्देँ कहैत छथि जे वर्ण शब्दक अर्थ वर्णन नहि होइत अछि (Varna of course does not mean 'description'), किन्तु व्याकरणानुसार **वर्ण्** धातुसँ भावमे ०अन् (ल्युट्) तथा ०अ (अच्) दूनू प्रत्यय भ' सकैत अछि ओ **वर्ण** शब्दक अर्थ वर्णन सेहो होइत अछि; प्रत्युत इयेह एकर मूल अर्थ (व्युत्पत्त्यर्थ) थिक; जाति, रंग आदि अर्थ तँ एही मूल अर्थक विकास थिक। ततबे नहि; मेदिनीकोषमे वर्णशब्दक अर्थ 'गुणकथा' अर्थात् गुणकथन (narration of qualities) कहल गेल अछि—

वर्णो द्विजादिशुक्लादियशोगुणकथासु च।

अतः एतय **वर्ण** शब्दक अर्थ 'वर्णन' सैह ठीक लगैत अछि। 'गीतक्रम' अर्थ एतय बड़ आयाससँ बैसैत अछि। आरम्भिक वाक्य-सभसँ प्रतीत होइत अछि जे सुनीतिबाबूक मतेँ एकर रचना कविलोकनिक मार्गदर्शनार्थ कयल गेल अछि। परन्तु आगाँ जाय ओ स्पष्ट कय देलनि अछि जे ई ग्रन्थ कथक अर्थात् कथावाचक-लोकनिक मार्ग-दर्शनार्थ लिखल गेल अछि। कथाप्रवचन कयनिहार, जे मिथिलामे 'व्यास' कहबैत छथि, एहि ग्रन्थसँ अवश्य लाभान्वित भ' सकैत छथि; हुनका कथा-प्रसंगेँ नगर, वन, आदिक वर्णन करय पड़ैत छनि ओ से एहिमे तैयार माल जकाँ संचित अछि।

परन्तु एकर जतबा भाग उपलब्ध अछि ततबामे धार्मिक विषय दिस, विशेषतः देवी-देवता दिस, कनेको अनुषक्ति नहि लक्षित होइत अछि, अतः कहि सकैत छी जे ई कथावाचक व्यासलोकनिक हेतु नहि लिखल गेल अछि। ग्रन्थकारक लक्ष्य जे रहल हो, एहिमे सन्देह नहि जे विषय-प्रतिपादनक दृष्टियेँ वर्णरत्नाकर ओहि पोथी सभसँ मिलैत अछि जे वैष्णवकालीन बंगालमे कथक-लोकनिक उपयोगार्थ लिखल गेल, कारण जे एहि-सभमे देवताक वर्णनक संग-संग वर्णरत्नाकरे जकाँ नगर, मध्याह्न, प्रभात, रात्रि आदिक वर्णन अछि। एकर विवरण डा० दिनेशचन्द्र सेनकृत **हिस्ट्री औफ बेंगाली लैंग्वेज एंड लिटरेचर** (कलकत्ता विश्वविद्यालय, १९११, पृ० ५५८-५८८)मे देल गेल अछि। डा० पी० एल० वैद्य पण्डित सुखलालजी तथा श्रीजिनविजयजीसँ सुनीतिबाबूकेँ इहो ज्ञात भेलनि जे ईदृश वर्णनक रूढ़ वाक्यावली खीष्टपूर्व पाँचम शतकक लगभग कतोक **जैन** ग्रन्थमे सेहो प्रचलित छल, जे **वण्णअ** (संस्कृत वर्णक) कहबैत छल। मूल ग्रन्थमे वर्णक पूरा-पूरा दोहराओल नहि जाइत छल, केवल इत्यादिवाचक शब्दसँ संकेत कय देल जाइत छल, ओ टीकामे एहि तरहेँ स्पष्ट कयल भेटैत अछि—**सम्प्रति अस्या नगर्या वर्णकमाह, यावच्छब्दकरणात् …औपपातिकग्रन्थ-प्रसिद्धवर्णकपरिग्रहः**। एहन वर्णक-सभ **भगवती** तथा **उववाइयसुत्त** आदि ग्रन्थमे पूरा-पूरा देल गेल अछि। मुनि श्रीजिनविजयजीक कथन छनि जे एहि प्रकारक वर्णक पालिधर्मग्रन्थहु-सभमे पाओल जाइत अछि, ओ संस्कृत तथा गुजराती ग्रन्थ सभमे सेहो प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि।

लेखकक उद्देश्य जे रहल हो, किन्तु एहिमे सभ विद्वान् सहमत छथि जे वर्ण-रत्नाकरमे तत्कालीन जनजीवनक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पक्षक अद्भुत वर्णण कयल गेल अछि। एहि दृष्टियेँ एकर तुलना सर जार्ज ग्रियर्सनक **बिहार पीजेन्ट लाइफ** सँ कयल जा सकैत अछि; भेद एतबे जे ओहिमे सामान्य जनक जीवन मुख्य अछि तँ एहिमे उद्बुद्ध वर्गक जीवन। एहि प्रकारक एक ग्रन्थ संस्कृतहुमे पाओल गेल अछि, **मानसोल्लास**, जे गायकवाड ओरिएन्टल सीरीज, बड़ोदरासँ हालमे प्रकाशित भेल अछि। किछु अंशमे एकर तुलना आइने अकबरीसँ सेहो कयल जा सकैत अछि।

एतय एक बात आओर ध्यानमे अबैत अछि। मनोवैज्ञानिक-लोकनि कहैत छथि जे भावुक हृदयपर संख्याक प्रभाव जादू जेकाँ पड़ैत अछि। प्राचीन कालक कोमल-मति विद्वान्लोकनि कोन वस्तुक परिगणन ओ वर्गीकरणक बड़ रसिक होइत छलाह। पौराणिक भावना तँ मानू संख्यैक स्तम्भपर ठाढ़ अछि। तीन लोक, चौदह भुवन, सात द्वीप, उनचास पवन, एकादस रुद्र—एहि सभक भावनामे संख्या तेना समाहित भ' गेल अछि जे केवल रुद्र पद कहलापर ११ संख्याक बोध भ' जाइत अछि, द्वीप

कहने सातक। एहि तरहें परिसंख्यात नाना वस्तुक भेदोभेदक परिगणन जानब पण्डितलोकनिक हेतु केवल बुद्धिक विलासे टा नहि, पौराणिक अभिज्ञताक एक आवश्यक अङ्ग भ' गेल छल। अति प्राचीन कालहिसँ विविध ग्रन्थमे एहि प्रकारक संख्याक विलास पाओल जाइत अछि। एहिमे सभसँ उपर स्थान अछि पालिग्रन्थ **दीघनिकायक**, जकर **संगीतिसुत्त** ओ **दसुत्तरसुत्तमे** आद्योपान्त पूर्णतः परिगणनामात्र भरल अछि। एहिमे एकसँ लय दस धरि क्रमशः वर्णित अछि जे कोन वस्तु एक अछि, कोन-कोन वस्तु दू प्रकारक, कोन-कोन वस्तु तीन, चारि इत्यादि। उदाहरणार्थ, चारिकें लिय, चारि ज्ञान, चारि समाधिभावना, चारि आर्यवंश, चारि प्रधान, चारि धातु, चारि धर्मपद, चारि योनि, चारि कर्म, चारि आर्यव्यवहार इत्यादिरूपें करीब चालीस वस्तुक चारि-चारि प्रभेद कयल गेल अछि। पुराण ओ धर्मशास्त्रमे जे एहि प्रकारक परिगणन कयल गेल अछि तकर सुन्दर संकलन केशवमिश्रक **संख्या-परिमाण** नामक धर्मशास्त्रग्रन्थमे कयल गेल अछि ओ वर्णरत्नाकरक बहुत प्रभेद-परिगणन एहि ग्रन्थक परिगणनसँ मिलैत अछि। अतः कहि सकैत छी जे वर्णरत्नाकर लिखबामे सेहो ओ प्रवृत्ति वा प्रयोजन प्रेरक रहल अछि जे संख्यापरिमाण लिखबामे; ई बात भिन्न जे एहिमे ज्योतिरीश्वरक क्षेत्र धर्मशास्त्रे नहि, कामशास्त्र, नाट्यशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि सेहो अछि। प्रायः प्रत्येक परिगणनमे, जतय परम्परया कोनो संख्या निश्चित हो, ज्योतिरीश्वर संख्याक उल्लेख करैत छथि; जतय संख्या परम्परया निश्चित नहि अछि ततहि '**प्रभृति अनेक**' शब्दक प्रयोग कयलनि अछि; उदाहरणार्थ पृष्ठ ५० देखू— अङ्ग, १८ प्रबन्ध, १३ मथाकम्प, ३६ दृष्टि, २० (कोली) हस्तकम्प, १० बाहुनृत्य ओ ६ चालकनृत्य।

विषय ओ क्रम-संगति

तड़िपत जाहि रूपमे ओ जतबा बाँचल अछि ताहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहिमे राजाकें केन्द्र-बिन्दु बनाय समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक ओ शास्त्रीय परिवेशक वर्णन करब लेखकक अभीष्ट छल। एहिमे लेखक दू शैलीक प्रयोग कयलनि अछि, वर्णनात्मक ओ परिगणनात्मक। किछु भाग शुद्ध वर्णनात्मक अछि, जेना प्रभात-वर्णन, ॠतुवर्णन आदि; किछु अंशमे वर्णन ओ परिगणन दूनू अछि; यथा नृत्य-वर्णनमे; ओ कतोकमे केवल परिगणन अछि, यथा ६४ कला, १२ आदित्य आदि। सहज प्रश्न उठैत अछि जे प्रत्येक वर्णन कोनो एक सूत्रमे क्रमाबद्ध अछि, कि पूर्णतः परस्पर-असम्बद्ध। हमरा जनैत एहिमे जँ कोनो सूत्र अछि तँ से थिकाह राजा, किन्तु ग्रन्थक सभ खण्डकें राजाक सम्पर्क-सूत्रसँ जोड़ब कठिन अछि। प्रथम कल्लोल नगर-वर्णनसँ आरम्भ होइत अछि जकर दुर्भाग्यवश आदिसँ दस पात लुप्त अछि। सम्भवतः

एहि ग्रन्थक आरम्भ राजधानीक वर्णनसँ भेल होयत ओ अन्तमे नगरक कात-करोटमे बसनिहार नीच जाति सभक वर्णन पर्वैत छी। तकरा बाद राजा दरबार लगबैत छथि; स्नान, पूजा, भोजन, पुनर्भोजन ओ शयन करैत छथि। भाट, मल्ल, विद्यावन्त, नर्तक ई सभ हिनक मनोरञ्जन करैत अछि। राजा प्रयाण करैत छथि, शिकार खेलाइत छथि। हुनक विलासार्थ अन्तःपुरमे रानी सुसज्जित होइत छथि। एतबा बात स्पष्टतः राजाक सम्पर्कसूत्रमे आबद्ध अछि, आ ई मुख्यतः वर्णनक शैलीमे लिखल गेल अछि। एहिमे कतहु-कतहु क्रमभङ्ग भेल अछि; यथा पुनर्भोजन-वर्णना शयनवर्णन सँ पूर्वहि चाही, रानीक वर्णन (पृ० ६४) सेहो एतहि चाही। परन्तु मोटा-मोटी एहिमे क्रमक आभास अछि। परन्तु जेना पूर्वमे कहि चुकल छी; राजाक परिवेशक वर्णनमे बहुधा परिगणन-शैलीक प्रयोग कयल गेल अछि ओ नाना वस्तुक उल्लेखमात्र कयल अछि। एहि सभ वस्तुक सम्बन्ध राजासँ जोड़ब कृत्रिम प्रयासमात्र होयत, जेना १२ पुत्र, ४९ पवन, ११ रुद्र इत्यादि। बहुधा एकै वस्तुक परिगणना प्रसंगवश अनेक ठाम आयल अछि, यथा राजपरिजन—पृ० ८, ३१, ३६, ६३ ओ ६४मे; गहना—पृ० ४, ४६, ६२; अस्त्रशस्त्र—पृ० ३, ३१, ६१ इत्यादि। अधिकांश परिगणनात्मक खण्ड परस्पर असम्बद्ध अछि।

वर्णरत्नाकरक भाषा

वर्णरत्नाकर मध्ययुगीन उत्तरभारतक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययनक हेतु तँ अमूल्य निधि अछिए, भाषाक विकासक अध्ययनहुमे एकर तेहने असाधारण महत्व अछि। उत्तर भारतक आधुनिक आर्यभाषासबहुमे ई प्रायः प्राचीनतम गद्य ग्रन्थ थिक ओ एकरा बादो गद्यक दर्शन बहुत दिन धरि नहिए जेकाँ होइत अछि। लोकप्रचलित भाषाक यथार्थ स्वरूप पद्यमे नहि, केवल गद्य मे परिलक्षित भ' सकैत अछि; तेँ भाषावैज्ञानिक गवेषकलोकनिक हेतु तँ ई वास्तवमे रत्नाकर थिक। एकर अन्यतम सम्पादक पं० बबुआजी मिश्रक बालक पं० श्री जयदेव मिश्रसँ ज्ञात भेल अछि जे स्व० सुनीति बाबू एकरा भाषावैज्ञानिक अध्ययनक हेतु परम उपयोगी पाबि एहिपर एक विस्तृत निबन्ध चतुर्थ अखिलभारतीय ओरियन्टल कान्फरेन्समे पढ़लनि ओ तकरहि किछु परिवर्त्तित-परिवर्द्धित क' एकर भूमिकामे देने छथि। तहिँ ओ एहि भूमिकामे केवल भाषाक विवेचनमे गोट पचीसेक पृष्ठ लगओलनि। परन्तु एतय हम ओतेक विस्तार नहि क' सामान्य साहित्यक छात्रक हेतु जतबे दूर धरि आवश्यक ततबे विवेचन करब।

ई तड़िपत विद्यापतिक देहावसानसँ केवल सत्तरि वर्ष बाद १५०९ ई०मे लिखल गेल। अतः एहिमे भाषाक ओ वर्णविन्यासक जे स्वरूप अछि लगभग सैह

विद्यापतिअहुक समयमे छल होयत से निरापद रूपें कहि सकैत छी। तदुत्तरकालक जे मैथिलीक तड़िपत वा कागतपर लिखल हस्तलेख भेटल अछि तकरासँ तुलना कयलापर सेहो एहि बातक पुष्टि होइत अछि। अतः विद्यापतिक विकृत गीत सभक वैज्ञानिक ढंगसँ पाठोद्धार करबामे एहि तड़िपतकें कसौटी मानब सर्वथा उचित होयत; कारण जे विद्यापतिकालक एतेक सन्निकट अन्य कोनो मैथिली लेख दृष्टिगत नहि अछि। एहि तड़िपतक ई सभसँ पैघ महत्त्व थिकैक।

एकर भाषाक विश्लेषणसँ एक आओर महत्त्वपूर्ण बात प्रकट होइत अछि। आठम शतकक बाद समाजमे व्यापक रूपें व्यवसायक आनुवंशिकीकरण भेल। तकर फलस्वरूप जे शब्द पूर्वमे शुद्ध व्यवसाय सूचित करबाक हेतु उपनाम वा उपाधि जेकाँ नामक आगाँ वा पाछाँ लगाओल जाइत छल से व्यवसायसूचक उपनामक संग-संग कौलिक उपाधि बनि गेल। उदाहरणार्थ,ब्राह्मणमे जे पाठनव्यवसाय करैत छलाह से पूर्वमे पाठक कहओलनि, किन्तु पाछाँ ओ व्यवसाय छुटिओ गेलापर हुनक पुत्रपौत्रादि पाठक कहबैत रहि गेलाह ओ एहि प्रकारें पाठक शब्द व्यवसायसूचकसँ कुलसूचक भ' गेल। समाजक एहि विशाल परिवर्तनमे अवश्य विशाल समयो लागल होयत। वर्णरत्नाकरक भाषासँ लक्षित होइत अछि जे एहि परिवर्तनक प्रक्रिया ओहि कालधरि संक्रमणावस्थामे छल। एकर भाषा ओ सन्दर्भ देखलासँ एहन सन भान होइत अछि जे जाहि व्यवसायक आधारपर कोनो कुलक लोककें जे आनुवंशिक उपाधि प्राप्त छलैक, से सभ ओहि समय धरि अपन-अपन कौलिक व्यवसायपर दृढ़ छल। वर्णरत्नाकरमे एहन बहुत शब्द आयल अछि जे प्रत्यक्षतः पदनाम मानल जाय वा कुलनाम अथवा व्यवसाय-सहकुलसूचक नाम, ई बेकछा क' कहब कठिन भ' जाइत अछि। एहन शब्द ओहि समय धरि शुद्ध कुलनाम नहि भ' गेल छल, प्रत्युत अपन व्युत्पत्त्यर्थ (व्यवसायवाचकता) सेहो अक्षुण्ण रखने छल। तकर प्रमाण ई जे एहन शब्द खन तत्सम रूपमे अछि तँ खन तद्भव रूपमे; कतहु-कतहु तँ आश्चर्य जे तत्सम ओ तद्भव दूनू रूपमे एक सङ्ग आयल अछि। की एहन ठाम तत्सम रूपकें व्यवसायवाचक ओ तद्भव रूपकें कुलनाम मानब अनुचित होयत ? एतय हम कतोक उदाहरण मात्र दय ई विषय समाजशास्त्रीक अध्ययनार्थ छोड़ि दैत छी :—

तद्भव (कुलनाम)	तत्सम (व्यवसायसूचक)
द्वारिक (पंडाक)	दौवारिक (दौलिक)
पलिहार)?)	प्रतीहार
अगहरा (?)	अग्रहार
बरिठा (धोबिक)	बलिष्ठ, बरिष्ठ

महथ (महथा)	महत्तक
पुरबए (सूँड़िक)	पुरपति
अखउलि (कायस्थक)	आक्षपटलिक
राउत (यादवक)	राजपुत्र
साहनि	साधनिक

अक्षर—एहि विषयमे जे विशेष रूपेँ अवलोकनीय अछि से नीचाँ देल जाइत अछि :—

(१) **य—ज, ष—ख**, तथा **र—ल** ई तीनू जोड़ा व्यापक रूपेँ परस्पर-विनिमेय अछि, मानू छबो भिन्न-भिन्न अक्षर रहितहुँ वस्तुतः तिनिए ध्वनिक सूचक हो। **य** निश्चित रूपेँ, तत्समकेँ छाड़ि, **ज** ध्वनिक सूचक थिक, तत्समहुमे स्वरवेष्टित नहि रहलापर **ज** उच्चरित होइत छल। **ष** तँ निरपवाद रूपेँ **ख** ध्वनिक सूचक थिक ओ **ख** अक्षरक बदला मध्ययुगमे सम्पूर्ण उत्तर भारतमे लिखल जाइत छल। हँ, **र—ल** क विषयमे किछु शंका रहि जाइत अछि। सम्भवतः मैथिलीमे ताहि दिन लिखल तँ जाइत छल **र—ल** अविशेषेण, किन्तु **र** ओ **ल** दूनू ध्वनिक अस्तित्व पृथक्-पृथक् छल एहिमे सन्देह नहि; एक प्रबल प्रमाण ई जे भूतकृत् **ल** कतहु **र** सँ लिखल नहि भेटैत अछि; एकतरफा **र** क स्थानमे **ल** खूब भेटैत अछि। ई गूढ़ भाषावैज्ञानिक विषय थिक, तेँ एतय विशेष नहि कहब। **ल** मे बहुत ठाम हल् चिह्न जेकाँ देल गेल अछि, जे ओकर उच्चारण वैशिष्ट्य सूचित करैत अछि। की एहिसँ ओड़िया-सदृश **ड** उच्चारण अभिप्रेत छल। **ड** क स्थानमे सेहो **ल** अक्षर पाओल जाइत अछि।

(२) ञ क व्यवहार सानुनासिक स्वरक हेतु कयल गेल अछि; यथा **सञो = सओँ**, **विदाञोत = बिदाओंन**, **भञाुह = भउँह = भौँह**।

(३) संयुक्त स्वर ऐ तथा औ क बदला तद्भवमे प्रायः सर्वत्र **अइ, अउ** लिखल अछि; यथा **चउदह, कइसन**, इत्यादि।

(४) तद्भवमे स्वररूपेँ **य** क प्रयोग अत्यन्त विरल अछि। अन्तःपाती **य** तथा **व** सेहो नहिये जेकाँ अछि। ए क बदला **य** अपवाद रूपहिँ एक-दू ठाम आयल अछि।

(५) नासिक्य + स्पर्शमे नासिक्य व्यंजनसँ लिखल गेल अछि, परवर्ती काल जकाँ चन्द्रबिन्दु वा अनुस्वारसँ नहि। यथा **चन्द्र > चान्द**, (**चाँद** वा **चांद** नहि), **चन्दन > चान्दन**, **पञ्च > पाञ्च** (**पाँच** नहि)। कतहु-कतहु अनुस्वारक प्रयोग चन्द्र-बिन्दुक बदला भेटैत अछि; यथा **तंक** (**उच्चा-तँक**, तकर)। कारकचिह्न रूपेँ चन्द्र-बिन्दुक प्रयोग प्रायः सर्वत्र अछि, **तेँ हाथेँ** इत्यादि।

संज्ञा—संज्ञाक ओ विशेषणक बहुवचन रूप ⁰न्हि, ⁰आह तथा ⁰ह भेटैत अछि; यथा **युवतिन्हि, भ्रमरन्हि, बलिआह, कइसनाह, कुशलह** । विशेषणमे ⁰आइ वा ⁰ह ततहि भेटैत अछि जतय ओ विधेय रूपमे अछि । **कर्तामे**—सामान्यतः कोनो चिह्न नहि रहैत अछि, किन्तु मूलतः कर्मवाच्य क्रियापद रहने ⁰ए वा ⁰ञ (मूलतः तृतीया विभक्ति) भेटैत अछि, यथा **नायके ब्रह्माञे विश्वकर्माञे** । कतहु-कतहु केवल चन्द्र-बिन्दु भेटैत अछि, यथा **कदलीँ** । कर्ममे—⁰केँ वा शून्य । **कारणमे**—⁰ए, ⁰एँ, ⁰ञ (कर्त्ता जेकाँ) व्यापक रूपेँ भेटैत अछि । बहुत ठाम सर्वनामसँ प्रतिनिर्देश क विभक्ति लागल अछि, यथा ये **कमल तेँ अलंकृत**; परन्तु बहुधा सर्वनामक एहि रूपक प्रयोग कारकचिह्न जेकाँ सेहो भेटैत अछि, यथा **लोकतेँ मण्डित** । **अपादानमे**—⁰सञो तथा ⁰तह—**लोक सञो** [११ क], **सुग पाषितह** । **सम्बन्धमे**—क, स्त्रीलिङ्गमे ⁰कइ । अधिकरणमे—करण जेकाँ ⁰ए, ⁰एँ, ⁰ञ । ⁰आँ सेहो प्रचलित छल, विशेष क' अधिकरणकारकक विशेषणमे; यथा **पङ्कजकाँ दल** 'पङ्कजक दलपर', **तकराँ कान** तकर कानमे, **सेवाँ बइसल** 'सेवामे बैसल' ।

समानाधिकरण विभक्ति—एहिमे संस्कृत जेकाँ विशेषणमे विशेष्यक समान विभक्ति लगयबाक सेहो प्रचलन अछि । यथा—**तनिके दान्ते अघातल** 'तनिक दाँतसँ...' **श्वेतपङ्कजकाँ दल** 'श्वेतपङ्कजक दलपर'; **गथले फुले** 'गाँथल फूलसँ' ।

सर्वनाम—सर्वनामक निम्नलिखित रूप सभ पाओल जाइत अछि (कोष्ठमे आधुनिक रूप)—**ये** (जे), **यं स्थान** (जाहि स्थानमे), **यँ** (जहाँ), **याक** (जकर); **इ** (ई), **ञे** (एहिसँ, एहि); **से तन्हि** (से), **तकर, तकरि, तंक, ताक, ताकर** (तकर), **तन्हिक** (तनिक), **तँ** (ताहिमे); **तोहि** (तोरा); **मञो, मञि** (हम), **मोरि** (हमर); इत्यादि ।

क्रियापद—क्रियापदक बहुत थोड़ रूप पाओल जाइत अछि । सत्तार्थक धातुक केवल सात रूप प्रयुक्त अछि—**अछ, अछिअ, छ, अह, आह, अथिकह** (अछि), **छथि** । एहिमे अह तथा आह एकर प्रयोग ⁰इतेँ क संगहि भेटैत अछि, **करइते आह बिचारइतेँ अह** । आज्ञा वा विधि मध्यम पुरुषमे ⁰ह खूब अछि, यथा **उठाबह, तोरह, लेह, देह** । इच्छामे केवल दु रूप भेटल अछि ⁰थि (अन्यपुरुष) तथा ⁰ञो (उत्तमपुरुष), **उपेषथि, जाञो** । भूतमे अधिक ठाम ⁰उ, किन्तु बहुत ठाम ⁰ल सेहो भेटैत अछि; यथा **देषु, भउ** । ⁰ल विशेषतः विशेषण रूपमे पबैत छी, यथा **भेल, लोटाएल, कएल** इत्यादि । भूतकालिक ⁰उ मे स्वार्थिक ⁰अह वा ⁰अक सेहो कतहु-कतहु जोड़ायल पबैत छी, जे आधुनिक मैथिलीमे अति प्रचलित अछि; यथा **भउअह** (भेल), **करुअक** (कयलक) । क्रियान्वयी कृत्प्रत्यय ओ संयोगी धातुक एतबा उदाहरण

भेटैत अछि—⁰ले यथा **देखले** (देखने) इत्यादि; ⁰इतें, ⁰इते—देखइते, (देखैत), **पैसि हलु** (पैसि गेलाह), **भए करइ** (करय, करबाक हेतु), कइ, भइ (क', भ'); **पैसि हलु** (पैसि गेलाह) ।

वाक्यविन्यास—एहिमे कोनो उल्लेखनीय विशेषता नहि अछि। जतय अपेक्षित होइत अछि ततए सर्वनामसँ प्रतिनिर्देश क' वाक्य तोड़ि देल जाइत अछि। यथा, **आठओ ये प्राकृत सिद्धि ताक कुशल** ।

प्रस्तुत संस्करण

एकर प्रथम संस्करणक सम्पादक डा० सुनीति कुमार चटर्जी अपन भूमिकाक अन्तमे लिखने छथि जे 'वर्णरत्नाकरक प्रत्येक शब्दक व्याख्या करब भारतीय विद्याक सकल भाषावैज्ञानिक अध्ययनक क्षेत्रमे ओ विशेषतः नवीन भारतीय आर्यभाषासभक भाषावैज्ञानिक अध्ययनक क्षेत्रमे बड़ मूल्यवान काज होयत (An annotated list of the words in the V. R. would essentially be of the highest value in all the domains of indology, and specially in the domain of philology of the new Indo-Aryan tongues)। परन्तु ई टीका करब कतेक कठिन अछि से प्रथम संस्करणक सह-सम्पादक पं० बबुआजी मिश्रक निम्नलिखित उक्तिसँ स्पष्ट होयत :

'प्रेस-कापी तैयार करयक काल श्रीसुनीतिबाबू हमरासँ बहुत शब्दक अर्थ पूछथि; परन्तु सभ शब्दक अर्थ कहि सकब हमरा साध्यसँ बाहर छल।··· हुनक वारंवार आग्रह भेल जे, देश गेला पर ग्रामीण वृद्धलोकनिसँ अर्थ बूझि पुस्तकमेँ ओकरा-सभकेँ सन्निविष्ट करी। परन्तु हमरासँ सेनहिँ भय सकल। नहि होयबाक अनेक कारण। एक तँ देश गेलापर ततेक फुरसति ओ धैर्य नहिँ जे गाम-गाम पर्यटन कय अर्थ बुझबाक प्रयत्न करी ; दोसर हमरा इहो भेल जे हमरहु-लोकनि आब बुढ़ैक हिसाबमे अयलहुँ, अतः जखन ओहि शब्द सभक किछुओ अर्थ बुझबामेँ नहि अबैछ तखन एहि कार्यमेँ सहायता पहुँचा सकनिहार व्यक्ति चेष्टा कयनहुँ भेटताह तकर कोन निश्चय। आदर्श तालपत्रक अशुद्धि-बाहुल्य सेहो एहि प्रयासमेँ अनुत्साह कयलक। एहना स्थितिमे अर्थसहित ग्रन्थक प्रकाशन असम्भवे रहल; परन्तु कहीतँ एहिसँ ई लाभ जे प्राचीनभाषा प्रेमी विद्वान्लोकनि हमरालोकनिक व्याख्या द्वारा किञ्चिन्मात्रो प्रभावित नहि भय···स्वतन्त्र रीतिसँ अपन व्याख्या लिखि सकताह।

एक दिस सुनीतिबाबू एकर व्याख्याक आवश्यकतापर जोर देलनि अछि तँ दोसर दिस पं० बबुआजी मिश्र एकर दुःसाध्यताक प्रतिपादन कयलनि अछि। तथापि हमरालोकनि एहि दुःसाध्य कार्यमे प्रवृत्त भेलहुँ ओ ई निर्णय कयल जे जतबे धरि वा जेहने भ' सकय, व्याख्या अवश्य देल जाय। हमरालोकनि ई स्वीकार करैत छी जे एकर व्याख्या लिखबामे जतेक श्रम, समय ओ पृष्ठ देब उचित छल से हमरालोकनि नहि क' सकलहुँ अछि। तखन जे किछु लिखल अछि से केवल एही भावनासँ जे हमरालोकनि सम्प्रति एहि ग्रन्थक जतबो शब्द जनैत छी, हमरालोकनिक परोक्ष भेलापर ततबोक ज्ञाता केओ रहताह वा नहि ताहिमे सन्देह; तेँ हम सभ अपन कर्तव्य बूझल जे जतबा जनैत छी से लिखि जाइ ओ कतबा अंश नहि जनैत छी सेहो स्पष्ट शब्दें सूचित क' दिऐक। एहि अज्ञताक सूचना टिप्पणीमे 'अनुसन्धेय' शब्दसँ देल गेल अछि। एहि तरहेँ ज्ञात ओ अज्ञात अंशकेँ बेकछाय देलासँ सम्भवतः छात्र ओ अध्यापकलोकनिकेँ बड़ लाभ होयतनि कारण जे ओ आब अन्हारमे नहि रहि ज्ञात अंश धरि अपन सामान्य पठन-पाठनकेँ ओ प्रश्नोत्तरकेँ सीमित रखताह, ओ अज्ञात अंशमे केवल अनुसन्धानक हेतु प्रवेश करत ह। आशा अछि, भविष्यमे अज्ञात अंशक मात्रा अनुसन्धान द्वारा घटैत जायत।

व्याख्या करबामे लौकिक ओ शास्त्रीय दूनू साधनक उपयोग कयल गेल अछि। मुदा काज जेँ पटनामे रहैत कयल गेल अछि तेँ स्वभावतः लौकिक साधनक उपयोग सन्तोषजनक मात्रामे नहि कयल जाय सकल। हँ, शास्त्रीय साधनक उपयोग अपेक्षानुसार कयल गेल अछि, यथा पुराण, स्मृति, धर्मशास्त्र, नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र, आदि स्रोतग्रन्थसँ मिलाय-मिलाय पाठोद्धार कयल गेल अछि, ओ आवश्यकतानुसार स्रोत-ग्रन्थक निर्देश कयल अछि। किन्तु शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दसभक शास्त्रानुसार परिभाषा ओ परिचय एहि व्याख्यामे स्थानाभावात् नहि देल जा सकल अछि। जिज्ञासु मूल ग्रंथ देखि अपन जिज्ञासाक समाधान क' सकैत छथि। सामान्यतः संस्कृतक तत्सम शब्दक अर्थ देब जानि-बूझि क' छोड़ि देल गेल अछि, किएक तँ कोनहु संस्कृत-कोशसँ अर्थ ज्ञात भ' सकैत अछि। हँ, खेदक विषय जे बहुत संस्कृतशास्त्रक पारिभाषिक पद सभ एखनहुँ धरि संस्कृतक कोशग्रन्थमे निबद्ध नहि भेल अछि; जेना नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र, कामशास्त्र आदि। एहन पारिभाषिक पदक अर्थ मूल संस्कृत ग्रंथहिसँ बूझल जाय सकैत अछि।

एहिमे वर्णरत्नाकरक मूलपाठ तालपत्रक अनुसार ओही रूपेँ अविकल राखल गेल अछि जाहि रूपमे प्रथम संस्करणमे मुद्रित अछि। एतेक धरि जे पृष्ठ-संख्या ओ पंक्तिक्रम तक यथासम्भव अक्षुण्ण अछि। हँ, उद्धृत पाठ पादटिप्पणीमे देल गेल अछि

ओ तत्सूचक अंक मूलमे प्रविष्ट अछि। मूलपाठमे तालपत्रक पृष्ठसंख्या १० क, १० ख, ११ क, ११ख इत्यादि क्रमे लघु बन्धनीक भीतर देल गेल अछि। एहिमे १० इत्यादि पातक संख्या थिक तथा अंकसँ आगाँ क तथा ख क्रमशः ओहि पातक प्रथम पृष्ठ ओ द्वितीय पृष्ठक सूचक थिक ; यथा [१० क] अर्थात् दसम पातक पहिल पृष्ठ। तालपत्रक पंक्तिक अवसान / द्वारा सूचित कयल अछि। शब्दसभक आगाँ बिन्दु जेना तालपत्रमे देल अछि, तहिना छापामे सेहो देल गेल अछि। ई कामाक वा पदच्छेदक काज करैत अछि। जे अक्षर दुर्वाच्य वा ‘लुप्त भ’ गेल अछि तकर संकेत छापामे × कयल गेल अछि।

—आनन्द मिश्र
—गोविन्द झा



अथ नायक वर्ण्णना ॥ दृढ · दूर · दुष्कर · लम्ब · लघ · [१२ क] छिद्र · छहु / गुणे सम्पूर्ण्ण सूर्यवंश · सोमवंश · दुओ ॰ धनुर्व्वेद तें कुशल · अञ्जन · गुटिका · पादुका · रस · परस · खहु[1] · वेताल · यक्षिणी · आठहु ये उपसिद्धि तें समन्वित । / स्तम्भन · मोहन · वशीकरण · उच्चाटन · मारन[2] · विद्वेषकरण · प्रक्षोभण · आकर्षण · आठओ ये प्राकृतसिद्धि ताक कुशल · । अणिमा · महिमा · गरिमा / लघिमा · ईशित्व[3] · वशित्व[4] · प्राकाम्य · कामावशायिता[5] · आठओ जे ·महासिद्धि ·क पारग · । शर · शल[6] · शक्ति · सेल्ल · सव्वन · परिघ · परशु · पाश · / पट्टीश[7] · खड्ग · भुशुण्डी · भिन्दि · पानादि[8] ये छत्तीस पानायुध[9] ओ दण्डायुध तंक कृताभ्यास् · । अश्वशिक्षा · गजशिक्षा · स्त्रीचरित्र · साम्तन · ज्यो/तिष · वैद्यक · चूडामणि · इन्द्रजाल · आकरज्ञान · रत्नपरीक्षा · तौर्यत्रिक · वीणावाद्य · हरमेषला · अश्ववन्ध · गजवन्ध · मृगवन्ध · मीनवन्ध · लीनवन्ध · घट/ ....

....

[१६ क] सीनता[10] दुर्गरक्षा · दुर्गप्रवेश · व्यसन · परीहार · आत्मरक्षा · म [·] न्त्रगोपन · राजरक्ष्यता · भृत्यभरण · उपजाप · सेनाप्रचार · देशरक्षा · बलाबलज्ञा [न को] षसञ्चय · व्युहरचना[11] · व्युहप्रवेश · व्युहभङ्ग · शशय[12] विचारादि चारासिउ ये राजनीति ताक तत्वज्ञ · । दया · दान · दाक्षिण्य · विनय · सेव/न · आहरण · आश्वास · इङ्गितज्ञान · कौशल · सौहृद · उपचार · धर्म्मज्ञता · अनालस्य · साहस · सौवच · सदाचार · सन्तोष · नीति/ज्ञान · सभापाटव · ऊह · आपोह[13] · वितर्क्क · छिद्रान्वेषणादि वहुत ये

---

१. खड्ग । २. मारण । ३. ईशित्व । ४. वशित्व । ५. कामावसायिता । ६. शूल । ७. पट्टिश । ८. भिन्दिपालादि । ९. पालायुद्ध । १० उदासीनता । ११. व्यूह । १२. संशय । १३. अपोह ।

शिष्टधर्म्में तें संयुक्त · । सात्विक · सुशील · सत्यसन्ध · सज्जन · / सुजाति · शास्त्रज्ञ · सेवक · सुवेष · शुद्ध · सुन्दर · सानुवन्ध · सुवचन · साचार · सकरुण · तेरहओ ये उपनायक गुण तें संपूर्ण शिष्ट देषु ॥ ॥

। १६ ख । [अथ नायिका] वर्ण्णना ॥ उज्वल[1] · कोमल · लोहित · सम · सुतल · सालङ्कार · पञ्चगुण संपूर्ण चरण · अकठिन · सुकुमार · गजहस्तप्राय · जानुयुगल · पीन · मांसल · कू/र्म्म-पृष्ठाकार श्रोणी · गम्भीर दक्षिणावर्त्त मण्डलाकृति · नाभि · क्षीण · सुकुमार · वलित · तिनि गुणे समन्वित मुष्टिग्राह्य · वेकण्ड · श्याम · स/दृश[2] · सुकुमार · सुष्म[3] · सुवेष · दीर्घ · छहु गुणे संपूर्ण नोमलता[4] · । निम्मंख[5] · निरन्तराय · पीन · कठिन · उत्तुङ्ग · वर्त्तुल छहु गुणे संपूर्ण पयो/धर । विशाल · वलित · विशलताकार · वांह · सुकुमार · अनुरक्त · निर्म्मल · ललित · रक्ताशोकपल्लवप्राय · हाथ । तूल · कोमलप्राय ति/नि रेखा समन्विति ग्रीवा · । कोमल · कुटिल · कुण्डलित · कनकाभरणभूषित · कान · । सम · सुपंक्ति · सराग[6] · सुव्यक्त · सदृश[7] · सदीप्त[8] · सुरक्त · सा · × × × × / ....
... ...

[१८क] खुटी · सिङ्कली · सूता · एकवाली · चुलि · वलया · मेषला · त्रिका · पद्मसूत्र · सवन (सरल ?) · कङ्कण · नूपुर प्रभृति अनेक अलङ्कार कएले · कइसनि देषु · ॥ जनि कामदेव संसार जिनि आएल · / तकरि पताका · । जनि एकर रूप देयकें इन्द्र सहस्राक्ष भेलाह · व्रह्माञो चतुम्मुंख कए हलु · जनि एहि आलिङ्गए लागि एक कृष्ण चतुर्भूज भए गेलाह / /॥ ॥

---

१. उज्ज्वल । २. मसृण । ३. सूक्ष्म । ४. लोम । ५. निसुंख । ६. सुराग । ७. मसृण । ८. सुदीप्त ।

अथ सखीवर्ण्णना ॥ पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह । श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँखि · काजरक कल्लोल अइ/ सन भञ्हु · गथले] फुले नर्म्मदाक शलाका[1] पूजल अइसन षोम्पा · परवाक[2] पल्लव अइसन · अधर · कनिअराक कर अइसन नाक · सीन्दुर मो / ति लोटाएल अइसन दान्त । वेतक साट अइसन वाँह · पारिजातक पल्लव अइसन हाथ · छोलङ्ग छोलल अइसन पयोधर · काञ्चिवरल्ली अइसन आगक (=आङ्गक) वान · अङ्कुरु[3] (डमरु ?)/ [१८ख] क माझा अइसन वेकण्ड · काकहक को × × अइसन जाँघ × विकशित स्थलपद्म अइसन चरण · सर्व्वगुण संपूर्ण उपालम्भ · विनोद मण्डन · सङ्गमशिक्षा · वीराभ्यास · छओ ये सखीक / र्म्म तँ कुशल · । नायिकाक दोसर शरीर अइसन × श्यामाजाति सखी ॥ अपरः प्रकारः । सहजन्या · चित्रलेखा · घृताची · उर्व्वशी · मेनका · रम्भा · ति/लोत्तमा · देवजानी · इ ये आठओ नायिका अथिकह सेहओ मन्दि होथि जकरे रूपे · । पुनु कयिसनि नायिका · । कामदेवक नगर अइसन शरीर / निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह · कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन । यमुनाक तरङ्ग अइसन भञ्हु · साँकरक शलाका अइसन नाक · सोनाक सी/प अइसन कान · अन्धकार-लता अइसनि विरनी · पालक वि [.] व[4] अइसन अधर · सहजे दालिव फुटल अइसन दान्त · कामदेवक पाश अइसन वाहु · निलहि[5] (? लोहित) पद्म अ/

... .

... .

---

१. शिला । २. पबराक । ३. डमरु । ४. बिम्ब । ५. लोहित ।

[२० क] [ख] ञ्जरीटयुगलप्राय लोचन · वक्र वलित घन · श्याम दीर्घ · कन्दर्प्पकोदण्डप्राय भ्रयुगल · चतुरस्र · चतुरङ्गुल[1] · कनकपट्टिका सुन्दर · निराल · सकुर · सरल सदृश[2] · / [सि]न्दुर दन्ति (=ण्डि)कालङ्कृन सीमन्त · सुरभि · स्निग्ध · प्रचुर · घन · कुञ्चित सुकुमार · सूक्ष्म · श्याम · सुसंयत · सकुसुम केशपाल · सुशीला · लज्जावती / × × विलासवती / गौराङ्गी · चन्द्रमुखी · गीतप्रिया · मधुरस्वरा · शिल्पवक्र (ह्र) (=०वती; ०वक्त्री) · मृदु भाषिणी · कलावती · कृष्णदेहा · चित्रवसना · अङ्गरागवती · व्रीलायुता · सर्व्वा / [ङ्ग] संपूर्ण्ण चित्रीणी[3] जाति नायिका · । ॥ अपरः प्रकारः ॥ स्वर्ग · मर्त्य · पातालक सौन्दर्य एकजाति नायिका वडे प्रणिधाने विधाताहुँ नायक स / × × एकेँ अपूर्व्व विश्वकर्म्माञ्ञँ निर्म्मंउलि याक मुखक शोभा देषि पद्मेँ जलप्रवेश कएल · आँषिक शोभा देषि हरिण वण गेल · केशक शोभा देषि चमरी प / [२०ख] [लायन कए] ल · दाँतक शोभा देषि तालिवे[4] हृदय वीर्दीण्णं[5] कएल · अधरक शोभा देषि प्रवाल द्विपान्तर[6] गेल · काँनक शोभा देषि वौद्ध ध्यानस्थित भेल · कण्ठक शो / [भा दे] षि कम्वु समद्रप्रवेश कएल · स्तनक शोभा देषि चक्रवाक उछन्न भेल · । वाहुयुगलक शोभा देषि पञुक नाल पङ्कनिमग्न भेल · हाथक शोभा देषि / × × × क पल्लव ग्रस्त[7] (? त्रस्त) भेल · जंघयुगलक शोभा देषि कदलीँ विपरीत गति कइलि · चरणक शोभा देषि स्थलकमलेँ निकुञ्ज आश्रय कएल · एवम्विध रत्ना[8] / × × × × संयुक्त त्रिभूवनमोहिनी[9] देषु । अपरः प्रकारः । कन्दलित तारुण्य · अपगत वाल्य · उद्भूत अभिलाष ·

१. चतुरङ्गुल । २. मसृण । ३. चित्रिणी । ४. दालिबे । ५. विदीर्ण । ६. द्वीपान्तर । ७. त्रस्त । ८. रत्नालङ्कार । ९. त्रिभूवन ।

अपगति[1] लज्जा · जागरुक भाव · अङ्कुरित / × × × एवम्बिध नायिका · । कुण्डल दुइ रत्नमण्डित त(क)रों कान कइसन देषु · । जनि कामदेवकाँ रथें चक्रदुइ जोलल अछ · सोनाक डोरें मध्यभाग बाँधल कइ / [२१क] स र · देषु · । जनि सौन्दर्यक तुलापुरुष काछल[2] बाँन्धल अछ · विचित्राम्बरक फुरहुरा कइसन देषु · जनि काञ्चनगिरिकाँ शृङ्ग मयूर नचइतें अछ · नूपुर दुइ शब्दा / यमान ताकाँ कइसन देषु · जनि त्रिभूवनमोहनी[3] मन्त्र जपइतें अछ । शोभा · विलास · भाव · हाव · गीत नृत्य · वाद्य · विनय · शील · आवर्ज्जन · पेश / लता · रूपातिशय · लज्जा · त्रयोदश गुणे संयुक्ति भद्राजाति नायिका देषु ॥

[4]॥ इति श्री कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वरविरचिते वर्ण्णरत्नाक/रो [० रे नायिका वर्ण्णनानाम] नाम द्वितीयः कल्लोलः ॥

अथ नायिका हास्यवर्ण्णना ॥ कुमुद · कुन्द · कदम्ब · कास · भास · कैलाश · कर्प्पूर · पीयूषक कानि[5] (= कान्ति) प्रसारीसन · क्षीरसमुद्रक दक्षिणानिले चालल तरङ्ग क लहरी अइसन · अमृतक सरोवर तरङ्गक सहोदर सन · शरतक पूर्ण्णिमाचान्दक ज्योत्स्ना अइसन · अभिन / [२१ ख] व प्रकशित कमलकोष प्रसारि[6] शोभा सन · कन्दर्प्पक दर्प्पप्रकासन सन · त्रैलोक्यक नागरजन युवजन हृदयमोहन मन्त्रसन · स्वेद · स्तम्भ · नोमाञ्च[7] · स्वरभङ्ग · कम्प · वैवर्ण्य · अश्रु/प्रलय इ ये आठओ सात्त्विक भाव ताक भण्डार सन · संयमित योगिजनक मननिधान[8] सन · मादन · उन्मादन · प्रक्षोभन[9] ·

---

१. उपगति । २. काञ्चन । ३. त्रिभुवन । ४. एतएसँ दू पंक्ति काटल अछि ।
५. कान्ति । ६. प्रसार । ७. लोमाञ्च = रोमाञ्च । ८. प्रणिधान ।
९. प्रक्षोभण ।